ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 78-81

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16 YEAR- June. -2020

नक्सली मनोवैज्ञानिक युद्ध कर्म

अनूप कुमार श्रीवास्तव

असिस्टेन्ट प्रोफेसर, रक्षा एवं स्त्रातेजिक अध्ययन विभाग महाविद्यालय भटवली बाजार (उनवल),गोरखपुर (उ0प्र0), भारत

Received- 25.01.2020, Revised- 01.02.2020, Accepted - 07.02.2020 E-mail: dranuplal79@gmail.com

सारांश : *वर्ष 1967 में पश्चिम बंगाल के सिलीगुड़ी संभाग के दार्जिलिंग जिले के नक्सलवादी गांव में फसल लूट की एक घटना ने भू–स्वामियों और भूमिहीन किसानों के मध्य वर्ग–संघर्श को जन्म दिया, जिसके परिणामस्वरूप भू–स्वामियों के विरूद्ध भूमिहीन किसान, श्रमिक व बेरोजगार युवकों ने अपना आन्दोलन आरम्भ किया। नक्सलवादी क्षेत्र होने के कारण इस आंदोलन का नाम दिया गया 'नक्सलवाद' एवं इस कान्ति को नाम दिया गया 'सर्वहारा की कांति'।*

कुंजीभूत शब्द– संभाग, नक्सलवादी, भू – स्वामियों, भूमिहीन, संघर्श, श्रमिक, बेरोजगार, आन्दोलन, सर्वहारा।

आज वस्तुस्थिति यह है कि नक्सलवाद भारत के किसी एक राज्य की समस्या नही हैं, बल्कि यह देश के बहुत बड़े भू–भाग पर अपने पांव पसार चुकी है, राज्य प्रशासनों द्वारा अभूतपूर्व दमन, दबाव एवं उत्पीड़न के बावजूद नक्सलवादी गतिविधियों का सिलसिला जारी है। अपनी अनेक भूलों के कारण नक्सलवाद अपने मूल स्थान पश्चिम बंगाल में तो नही पनप सका, किन्तु आज यह उन राज्यों में सषक्त रूप से उभरा है जहां नक्सलवादियों के छिपने एवं कूट योजना बनाने हेतु जंगल व घाटी क्षेत्र विशेष रूप से उपलब्ध है। राष्ट्रीय सुरक्षा के लिये ज्वलंत आंतरिक, खतरा बन चुकी नक्सलवादी समस्या से छत्तीसगढ़, झारखण्ड, बिहार, आंध्रप्रदेष, उड़ीसा, मध्य प्रदेश व महाराष्ट्र तो ग्रसित हैं ही किन्तु इसकी ऑच से केरल, तमिलनाडु, उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड, कर्नाटक तथा पश्चिम बंगाल भी अछुते नही है।

आधुनिक युद्धों का प्रमुख उद्देश्य शत्रु को अपनी नीतियों मानने के लिये तथा आत्मसमर्पण करने के लिए विवश करना होता है। नक्सलियों द्वारा भी इतिहास से वर्तमान तक के लंबे सफर में मनोवैज्ञानिक युद्धास्त्रों का भरपुर दोहन किया गया है क्योंकि आधुनिक युद्धों की सफलता केवल सैनिक कार्यवाहियों पर ही निर्भर नही होती, बल्कि उसमें मनोवैज्ञानिक तत्वों का भी महत्वपूर्ण योगदान होता है। मनोवैज्ञानिक उपायों का उपयोग कर शत्रु के मनोबल को तोड़ दिया जाता हे। सैन्य कार्यवाही केवल युद्धकाल तक ही सीमित होती है, जबकि मनोवैज्ञानिक युद्ध संक्रिया शांतिकाल में भी चलती रही है।

नक्सल मनोवैज्ञानिक युद्धकर्म यह एक ऐसी युद्धनीति है, जिसके तहत नक्सली न केवल अपने विचारों/सिद्धान्तों की जड़े रोपित करते हैं, अपितु उसकी पौध तैयार कर द्रुत गति से अपनी शाखाओं को विस्तारित कर रहे हैं। जिसमें मनोवैज्ञानिक युद्धास्त्र उर्वरक या पोषक तत्वों की तरह है, फलतः उनकी संगठनात्मक शक्ति में मजबूती आई है और 80 के दशक में मृत समझकर छोड़ा गया नक्सलवाद पुनर्जीवित होकर हमारे देश की मुख्य आंतरिक समस्या बन गया है।

नक्सली मनोवैज्ञानिक युद्धास्त्रों को कुषलता पूर्वक संचालन कर रहे हैं और अपनी घुसपैठ को मजबूत कर नित नये आधार बना रहे हैं। चूँकि इस युद्ध में अदृष्य मनोवैज्ञानिक हथियारों का प्रयोग किया जाता है। अतः नियमों के अन्तर्गत आबद्ध नही किया जा सकता। नक्सलीवादी अपनी शैषवस्था से परिपक्व अवस्था के तमाम चरणों में मनोवैज्ञानिक विधियों का भरपूर दोहन करते रहे हैं इसके लिये आरम्भिक चरणों में वे उन स्थानों का सुदूर अंचलों का चुनाव करते हैं। जहॉ कतिपय विकास की बयार नही पहुँच पायी है। इसके बाद वे लोगों के बीच मनोवैज्ञानिक हथकण्डों के प्रयोग से भ्रम का जाल फैलाकर उनके असंतोष को आकोश में तब्दील कर देते हैं।

नक्सली मनोवैज्ञानिक युद्ध का उद्देष्य –

1. शत्रु के सैनिक और असैनिक दोनों ही क्षेत्रों में लोगों को इस प्रकार प्रमाणित करने का प्रयास किया जाता है कि –
   - अ. सरकार के प्रति अविश्वास पैदा हो जाए।
   - ब. सरकार को सहयोग देने से इन्कार कर दें।
   - स. आत्मसमर्पण कर दें।
   - द. उनका (षत्रुपक्ष–सैनिक/असैनिक) मनोबल इतना टूट जाए कि वे उनके समर्थक बन जाए।
2. इस हेतु आराजकता, अविष्वास, विभेद फैलाना।
3. मनोवैज्ञानिक हथकण्डों से षत्रु को इतना डराना कि वह सही ढंग से सोचने योग्य ना रहें।
4. सैनिकों के युद्ध की इच्छा को समाप्त करना।

नक्सली मनोवैज्ञानिक युद्ध संक्रिया के षस्त्रः–

1. प्रचार –PROPAGANDA

अनुरूपी लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16 YEAR- June. -2020

2. अफवाह–RUMOUR
3. मस्तिष्क प्रक्षालन– (ब्रेनवाश) एवं विचारारोपण–BRAINWASH

नक्सली इस प्रकार रूपी मनोवैज्ञानिक अस्त का विशिष्ट तौर पर इस्तेमाल करते हैं। यदि हम इतिहास पर दृश्टिगत करें, तो नक्सल उद्भव या इस समस्या के आरंभिक चरणों में प्रचार के साध नही इनका प्रमुख आधार थे, इसी आधार पर उन्होने स्वयं को स्थापित किया और विस्तारित होते चले गए।

नक्सली प्रचार में संवेग का सहारा लिया जाता है जिसमें शत्रुपक्ष द्वारा श्रोता पक्ष को झकझोर दिया जाता है। तर्क युक्त चिंतन के अभाव में वे अपनी बातों से श्रोता का विश्वास प्राप्त कर लेते हैं। उसके मातृभूमि प्रेम, देश भक्ति प्रेम की भावना को चुनौती दी जाती है। इस प्रकार जनता को सम्मोहित करके उसके सहयोग से प्राप्त किया जा सकता है।

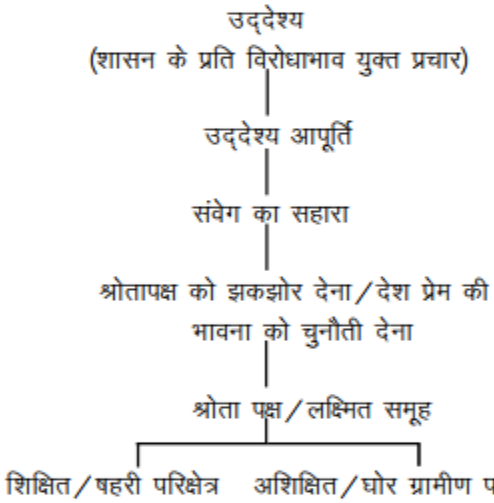

नक्सली भ्रामक प्रचार को सिद्ध अस्त के रूप में प्रयोग कर सकते हैं। यथा महाभारत युद्ध के दौरान कौरव पक्ष के सेनापति आचार्य द्रोण के मनोबल को ध्वस्त करने के लिये धर्मराज युधिष्ठित द्वारा यह प्रचारित किया गया कि " अश्वत्थामा मारा गया" अश्वत्थामा आचार्य द्रोण का पुत्र था, इस समाचार से कथित हो उन्होने अपने हथियार रख दिये।

नक्सल प्रचार के माध्यम/साधन –

1. रेडियो– सुदूर बनांचल के ग्रामीण ईलाकों में जब विकास की बयार नही पहुँच पायी थी, उन दिनों रेडियो जैसे माध्यमों में खबरें/अफवाहें सुनना कतिपय मासूम एवं भोले आदिवासियों के लिये विश्वसनीय सूत्र होगा। इसके अलावा कभी–कभी यह नक्सली अपने स्वयं के रेडियो स्टेशनों की स्थापना तथा प्रसारण भी करते हुए जनता में सरकार के खिलाफ उकसाने व प्रचार का मध्यम बनाते हैं।

2. टेलीविजन– इस आधुनिक साधन के माध्यम से प्रचार बहुत ही सजीव ढंग से किया जा सकता है। नक्सली प्रचार हो अथवा सुरक्षा बल/शासन द्वारा किया गया प्रचार हो टी0बी0 के माध्यम से सामान्य जन तक आसानी से पहुँच जाता है, जो विभिन्न प्रकार के भ्रामक सूचनाओं का प्रसारण भी आये दिन उन क्षेत्रों में किया करते हैं और सरकार के खिलाफ कार्य करते रहते हैं।

3. इण्टरनेट– इण्टरनेट के माध्यम से नक्सली अपने प्रचार–प्रसार में बखूबी इस्तेमाल कर रहे हैं, वे इसके माध्यम से अपनी बात को आम लोगों तक पहुँचना, अपने आतंकी कार्यवाही को न्यायोचित ठहराना, अपने नेताओं के विभिन्न आलेखों का प्रसारण, नक्सली इण्टरनेट के माध्यम से गलत और भ्रामक सूचना का प्रसार करते हैं। साथ ही नक्सली साईवर आतंक के माध्यम से मनोवैज्ञानिक युद्ध लड़ते हैं।

4. पोस्टर– नक्सली किसी वारदात को अंजाम देने के पूर्व अथवा बाद में वारदात के स्थान पर अपना पोस्टर चिपका देते हैं। पोस्टर प्रचार का सषक्त साधन है। यह जनसामान्य का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करते हैं।आकर्षक पोस्टरों पर अपना प्रचार करना लाभकारी होता है।

5. समाचार पत्र और पर्चियां– संसार की गतिविधियों के बारे में जानने के लिये समाचार पत्र एक अत्यन्त लोकप्रिय साधन है, जिनके माध्यम से जनता को आसानी से प्रभावित किया जा सकता है। ये भूमजाल फैलाने वाले शब्दों के तानें–बानें से बुने होते हें। इसका प्रभाव दूरगामी होता हे। पर्चियां बॉटकर प्रसार प्रति व्यक्ति, प्रत्येक घर किया जा सकता है। उदाहरण के तौर पर नक्सली समाचार पत्र बुलेटिन प्रकाशित करते हैं।

6. साहित्यिक प्रकाषन– नक्सलियों द्वारा साहित्यक सृजन नक्सल साहित्य कहलाता है। नक्सलियों का एक विशिष्ट समूह होता है जो विशेष तौर पर प्रचार हेतु स्त्रात्तेजिक दृष्टिकोण अपनाते हुए साहित्य सृजन करता है।

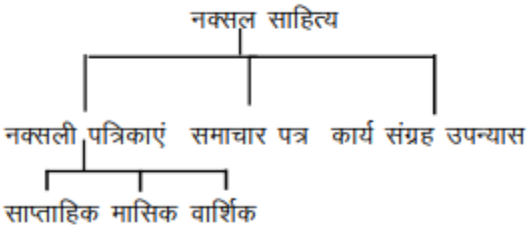

7. ध्वनित विस्तारक यंत्र– नक्सली प्रचार हेतु

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16 YEAR- June. -2020

ध्वनि विस्तारक यंत्रों यथा लाउडस्पीकरों का बखूबी इस्तेमाल करते हैं। इनमें माओवादी नारे, गीतों को दोहराव क्रमशः होते रहता है।

8. सांस्कृतिक प्रचार–

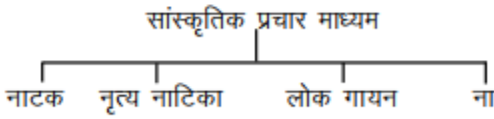

उपरोक्त विधियों से नक्सली सांस्कृतिक प्रचार कर जनता को नक्सल गतिविधियों में जोड़ने में सफलता मिलती है।

9. सामूहिक प्रचार– काफी सारे लोगों का समूह योजनावद्ध में चलना रैली अथवा जुलूस कहलाता है। जब नक्सली इस कार्य को आरम्भ करते हैं तो उसके लिये दो चार शब्दों में तुकबंदी करता वाक्य रच दिया जाता है और अब उसे प्रचारित किया जाता है।

10. नक्सली नारा– कम समय में अधिक लोगों तक अपनी बात पहुँचाने हेतु यह सर्वोत्तम माध्यम है। नक्सली गॉव–गॉव में जाकर आम सभायें करते हैं। उनका हृदय जीतने और अपने लिये विष्वास जागृत करने के लिये प्रभावशाली भाषण देते हैं।

11. दिवार लेखन– दिवार लेखन जैसे माध्यमों का प्रयोग किसी घटना के उपरान्त अपना घटना के पूर्व चेतावनी देने हेतु करते हैं। इससे आम जनता में दहशत की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। कई बार नारे भी जो माओं विचारों के उद्घोषक होते हैं। दिवार पर लिख दिये जाते हैं। बार–बार लेखों को पढ़कर स्मृति पटल पर उस तथ्य से जुड़ी आधारभूत संरचना आकार लेने लगती है।

सत्यासत्य से युक्त जो समाचार एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक पहुँचता है, जनश्रुति, जनप्रवाद या अफवाह की संज्ञा दी जाती है।

जन प्रवाद किसी वास्तविक या काल्पनिक व्यक्ति समुदाय या घटना के सम्बन्ध में अभिव्यंजना या कल्पित कहानी है, जो फैलाने के साथ–साथ विकसित होती जाती है।

जन प्रवादया अफवाह की विशेषता यह होती है कि एक मुँह से दूसरे मुँह की ओर होती हुई यह प्रायः तीव्रता से फैलती है। इसमें अतिरंजना और सम्मोहकता का समावेश होता है।

इसके अलावा सैनिक क्षेत्र भी जनप्रवाद के शिकार होते हैं। प्रायः भविष्य में सैन्य संक्रियाओं एवं मोर्चा की असफलताओं को सैनिकों से छिपाने का प्रयास किया जाता है। ऐसे ही समय में विद्रोही पक्ष अथवा माओवादी सुनियोजित योजनानुसार अफवाहें फैलाने का प्रयास करते हैं, जिनका लक्ष्य सैनिकों के मनोबल को प्रभावित करना उनमें अविश्वास एवं विद्रोह की स्थिति पैदा करना, अंततः उन्हे आत्मसमर्पण हेतु बाध्य करना होता है।

अफवाह का प्रसारण नक्सल मनोवैज्ञानिक युद्धकर्म का एक महत्वपूर्ण हथियार है। धुँएं की भॉति इसका प्रयोग विरोधी के मनोबल को ध्वस्त करने हेतु किया जाता है। छत्तीसगढ़ के सुदुर वनांचल में स्थित वे आदिवासी बाहुल्य ग्राम जो नक्सल प्रभावित क्षेत्रों की श्रेणी में षुमार होते हैं, वहॉ उपरोक्त कारक जन प्रवाद की उत्पत्ति व प्रसार में अग्रणी भूमिका निभाते हैं।

अफवाह के प्रसारण में सहायक कुछ मनोवैज्ञानिक तथ्य–

1.प्रदर्षन प्रवृत्ति– नक्सली अपने सम्मान वृद्धि अथावा समर्थन प्राप्त करने के उद्देश्य से दूसरे की दृष्टि में महत्वपूर्ण बनने के लिए अफवाह प्रसारण कर सकते हैं।

2.आष्वस्त करना एवं भावनात्मक समर्थन– नक्सली अपने तनाव को दूर करने हेतु अफवाहों का सहारा लेते हैं। वह दूसरों की सहानुभूति प्राप्त करने के लिए ऐसा कर सकते हैं। जब प्रति नक्सली कार्यवाही में सुरक्षा बलों द्वारा अफवाहों का खण्डन या प्रति प्रचार कार्यवाही की जाती है तो उनके मध्य तनाव उत्पन्न हो जाता है।

3. प्रक्षेपण– भय, ईच्छा व आतंक के वसीभूत होकर व्यक्तिगत अफवाहें फैलाया जा सकता है।

4.समर्थन प्राप्त करना– श्रोता का समर्थन प्राप्त करने के लिए भी जन प्रवाद का सहारा लिया जा सकता है जो कि षीघ्र ही कहे गये तथ्यों के रूप में स्वीकार किया जाने लगता है।

5.चोट पहुँचाना– विरोधियों को आघात पहुँचाने हेतु भी जनप्रवाद का सहारा लिया जाता है– जैसा कि महारतभारत युद्ध के दौरान सेनापति आचार्य द्रोणाचार्य को हतोत्साहित करने के लिए उनके पुत्र अश्वत्थामा के मौत की झूठी खबर फैलाई गयी।

नक्सलियों के छापामार युद्ध प्रक्रम के अन्तर्गत आने वाले ब्रेनवाश तीसरा अन्तिम और सबसे प्रभावषाली मनोवैज्ञानिक अस्त्र है, जो प्रचार व अफवाह प्रक्रिया समाप्त होने के पश्चात् व्यक्ति के विचार प्रत्यारोपण की प्रक्रिया है।

मस्तिष्क प्रक्षालन एकाएक धर्म परिवर्तन के भॉति दृश्टिकोण का पुनः निर्धारण है; जो कि विरोधी पक्ष द्वारा विपरित दृश्टिकोण रखने वाले प्रतिपक्षी की विचारधारा का अमूल चुल परिवर्तन करने के लिए किया जाता है। इस प्रक्रिया के माध्यम से प्रतिपक्षी की विचारधारा को पूरी तरह से उसके मस्तिष्क से साफ करके उसके स्थान पर अपनी विचाराधारा को पोषित करना होता है। यथा धर्म परिवर्तन के बाद व्यक्ती की सारी मान्यतायें, सोच व रहन – सहन

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16 YEAR- June. -2020

परिवर्तित हो जाता है। इसी प्रकार मस्तिष्क प्रक्षालन की प्रक्रिया से गुजरने के पश्चात् सम्बन्धित व्यक्ति की विचारधारा पुरी तरह से बदल जाती है।

उपरोक्त तथ्यों से स्पष्ट है कि आज नक्सलवाद भारत की आन्तरिक सुरक्षा के लिये एक खतरा बन चुका है;जिसके लिये जरूरी है। सामाजिक विशमता दूर करें और कल्याणकारी योजनाओं का लाभ उन सभी लोगों को प्राप्त कराये जो उसके असली हकदार हों। जब तक भूख उत्पीड़न, दबाव, दहशत, पीड़ा एवं वंचित आबादी रहेगी तब तक असंतोष और अराजकता नक्सलवाद जैसे आन्दोलनों को जन्म देती रहेगी।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

2. भाटिया, हंसराज, असामान्य मनोविज्ञान, राजकमल, प्रकाशन, नई दिल्ली, 1975
1. भारद्वाज, दिनेष चन्द षिक्षा मनोविज्ञान, माडन बुक डिपो, नई दिल्ली,1978
3. चौबे नारायण दत्त एवं पाण्डेय बाबूराम, सैन्य अध्ययन, प्रकाष बुक डिपो–बरेली, 1993
4. गुप्ता डॉ0 परषुराम, गुरिल्ला युद्धकर्म प्रकाष बुक डिपो, नई दिल्ली।
5. गुप्ता डॉ0 परषुराम, सैन्य मनोविज्ञान, प्रकाष बुक डिपो, नई दिल्ली।
6. सिद्धान्त, त्रैमासिक राश्ट्रीय षोध जनरल, 2010 सितम्बर, 2011 जनवरी
7. शोध संकल्प–ISSN-22772715, त्रैमासिक शोध पत्रिका, भिलाई, छत्तीसगढ़।
8. फ्रॅटलाईन
9. इण्डिया टूडे पत्रिका।

*****